भक्ति रस में मग्न किशनगढ चित्रशैली में अंकित नेत्रों का आध्यात्मिक स्वरूप

डॉ० रीता सिंह
PDFWM (U.G.C) ललित कला विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० रीता सिंह,

भक्ति रस में मग्न किशनगढ चित्रशैली में अंकित नेत्रों का आध्यात्मिक स्वरूप,

Artistic Narration 2018, Vol. IX, No.2, pp.40-44

http://anubooks.com/?page_id=485

सांराश

"किशनगढ़ के चित्रों में नेत्रों का चित्रण विशेष विधा में है जो कि इसे अन्य राजपूत चित्रकला शैली के कौशल से अलग कर वैशिष्ट की श्रेष्ठ श्रेणी प्रदान करता है। नेत्र सारे मुख मण्डल में इतने प्रमुख रहते हैं कि प्रेक्षक का प्रथम आकर्षण और अन्तिम आकर्षण नेत्र ही होते हैं। कला हो या साहित्य नेत्रों को सभी में मुखरित स्थान दिया गया हैं। किशनगढ़ के चित्रों को देखने मात्र से ही उसमें सर्वप्रथम चित्रित आँखों से ***आत्मसम्वाद*** *होता है और असीम आनंद की अनुभूति होती हैं। राजा सावंत सिंह (नागरीदास) जी ने भी नेत्रों की अधिक चर्चा की हैं। उनके शब्द चित्र के साथ–साथ रेखांचित्र पर भी बनाये हैं, वे आंखे बणीठणी की हो या राधा–कृष्ण की। नागीदास जी ने दो शब्द चित्र बनाये एक "इश्क चमन" है दूसरा "रैना रूपारस" दोनों में ही आंखों का अंकन विशेष रूप से किया गया है।*

किशनगढ़ के चित्रों में आंखों का वर्णन तो हुआ ही है। साथ ही काव्य में भी अनेक शब्द चित्र विद्यमान है। नागरीदास की वल्लभीय भक्ति से ओतप्रोत वहाँ के कलाकारों ने आध्यात्मिक भावभूमि को चित्रों का आधार बनाया और राधा–माधव को सामान्य जन के समान चित्रित किया है। इस शैली का कोई भी चित्र उठाकर देखने से सर्वप्रथम आंखों पर ही दृष्टि जाती है।

प्रस्तावना

उपशैलियों में किशनगढ़ शैली के लघुचित्र पर्यटकों को सदैव बहुत प्रभावित करते रहे हैं। "किशनगढ़ शैली के चित्र न केवल भारत में वरन् विश्व–भर में प्रसिद्ध है। काव्य और कला का जो कमनीय संगम हमें किशनगढ़ शैली में मिलता है, वह **अद्वितीय** है। विषय के सही प्रतिपादन और विश्वासपूर्ण आलेखन के संदर्भ में देखा जाये तो किशनगढ़ शैली के लघुचित्र **तत्कालीन** कलाकारों की साधना और भावना की जीवंत साक्षी देते हुए से प्रतीत होते है।"[1] "देश के परिदृश्य में राजस्थान का सांस्कृतिक वैभव बेजोड़ है। त्यागमयी ललनाओं, साहसी वीरों और गरिमामयी संस्कृति के इस प्रदेश का भौगोलिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक वैविध्य अनोखा है।"[2] भक्ति रस में मग्न किशनगढ़ के राजा कवि, चित्रकार, संगीतकार, राधा–कृष्णमय हो गये। इससे जो रसधारा फूटी वह सहज थी स्वाभाविक थी। चाहे वह काव्य हो, चित्र हो या संगीत हो, इस त्रिवेणी में राधा कृष्ण की ही महिमा मण्डित थी। किशनगढ़ की चित्रण शैली अपनी सहज भक्ति भावना के कारण ही सर्वश्रेष्ठ है।

किशनगढ़ की चित्रकला पीढ़ियों से भक्ति में डूबी रही है। जिसका निखार काव्य और चित्र में मूर्त हो पाया है। किशनगढ़ का इतिहास साक्षी है कि यहाँ सदैव से अर्थात् पीढ़ियों से भक्ति भावना सर्वत्र व्याप्त रही और अध्यात्म अठखेलियाँ करता रहा है और इसी कारण इस छोटी सी रियासत ने विश्व में ख्याति प्राप्त की हैं किशनगढ़ शैली में प्राण फूंकने वाले महाराजा नागरीदास जी (सांवत सिह) वल्लभ सम्प्रदाय के **अनुयायी** थे और स्वयं राधा माधव के रूप में उपासक थे। यह शैली कई पीढ़ियों से भक्ति भावना से ओत–प्रोत की साक्षी रही है। नागरीदास जी को जैसे ललित कलाएँ विरासत में मिली हो। "नागरीदास के कलात्मक व्यक्तित्व ने किशनगढ़ शैली को एक नवीन मोड़ दिया। उनमें रूप सौन्दर्य के प्रति अपूर्व जिज्ञासा के साथ ही साथ भावुक हृदय की भक्ति भावना भी थी।[3] उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व में यही भक्ति भावना व्याप्त रही हैं। "उनकी पदावलियों ने कृष्ण भक्ति की सुधा धारा पूरे राजस्थान में बहा दी तथा उन्हीं की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से चित्रकला ने नया आयाम इनकी कविताओं के आधार पर बनाया"।[4]

नागरीदास के अनुभूतिपरक काव्य को आत्मसात करके और उसके आध्यात्मपरक **दृष्टिकोण** को चित्रकारों ने रंग–रेखाओं के माध्यम से व्यक्त किया है। काव्य में वर्णित राधा–कृष्ण की रूप माधुरी का सौन्दर्यात्मक चित्रण किया है और चित्रों में नेत्रो का वर्णन सहज बन पड़ा है। "किशनगढ़ के चित्रों में नेत्रों का चित्रण विशेष विधा में है जो कि इसे अन्य राजपूत चित्रकला शैली के कौशल से अलग कर वैशिष्ट की श्रेष्ठ श्रेणी प्रदान करता है। नेत्र सारे मुख मण्डल में इतने प्रमुख रहते हैं कि प्रेक्षक का प्रथम आकर्षण और अन्तिम आकर्षण नेत्र ही होते हैं।[5] कला हो या साहित्य नेत्रों को सभी में मुखरित स्थान दिया गया हैं। किशनगढ़ के चित्रों को देखने मात्र से ही उसमें सर्वप्रथम चित्रित आँखों से **आत्मसम्वाद** होता है और असीम आनंद की अनुभूति होती हैं। राजा सावंत सिंह (नागरीदास) जी ने भी नेत्रों की अधिक चर्चा की हैं। उनके शब्द चित्र के साथ–साथ रेखांचित्र पर भी बनाये हैं, वे आंखे बणीठणी की हो या राधा–कृष्ण की। नागीदास जी ने दो शब्द चित्र बनाये एक "इश्क चमन" है दूसरा "रैना रूपारस" दोनों में ही आंखों का अंकन विशेष रूप से किया गया है।

वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव किशनगढ़ शैली के लिए विशेष स्थान रखता है। वल्लभाचार्य ने स्वयं ही कहा है कि त्याग से और श्रवण, कीर्तिनादि साधनों से प्रेम का बीज हृदय में जमता है।[6] इसी भाव को आत्मसात करते हुए किशनगढ़ के चित्रकारों ने चित्रण के लिए कृष्ण भक्ति को ही अपनी तूलिका का आधार बनाया। चूंकि वल्लभाचार्य स्वयं चित्रकार एवं चित्र प्रेमी थे अतः चित्रकला में निपुण होना तब आचार्य परम्परा के अनुकूल एक आचरण हो गया था।[7]

किशनगढ़ के चित्रों में आंखों को विशेष नामों से सम्बोधित किया गया है, जैसे खंजनाकृति, मीनाकृति, सकाजल, विसाल, मादक नेत्र आदि। यहाँ के चित्रों में नेत्रों का चित्रण विशेष विधा में है जो अन्य राजपूत चित्रकला शैली के कौशल से अलग कर वैशिष्ट की श्रेष्ठ श्रेणी का श्रेय देता है।[8] नागरीदास जी ने आँखों को केवल आँखे न मानकर अपने इष्ट की प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम माना है। क्योंकि सम्पूर्ण जीवन में आँखों का सर्वाधिक महत्व हैं। हमारी ज्ञानेन्द्रियों में आँख सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं संवदेनशील है। **"इश्क चमन"** नागरीदास जी का हस्तलिखित शब्द चित्र है जो किशनगढ़ की चित्रकला का नमूना है। यह चित्र एक पृष्ठ का है। इसमें क्यारियाँ बनी हैं जैसा कि चमन में होता है। एक–एक क्यारी में एक–एक दोहा लिखा है। एक–एक क्यारियों के बीच जल–प्रणाली है। ऊपर दो बड़ी–बड़ी आंखे बनी हुई हैं, जिनसे अश्रु प्रवाहित हो रहे हैं। यही अश्रु जल–प्रणालियों में बह रहा है। जिनसे इश्क चमन की क्यारियां सिंचित हो रही हैं यह चित्र लेख 'इश्क–चमन' के नागरीदास ग्रंथावली के निम्नांकित दोहे के आधार पर बना है–

चस्मौ के चस्मां झरै, झरत, आब फिराक
इस्क चिमन त सब्ज रहै, दिल जमीन होय पाक[9]

इससे यह स्पष्ट है कि कलाकार हो या कवि, वह भावनाओं की अतल गहराई में जाकर चित्र बिम्ब को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए रेखाओं और शब्दों का संयोजन करता है जिससे उसकी आध्यात्मिक भावभूमि सक्रिय हो जाती है। इसी का प्रतिफलित रूप नागरीदास के ये शब्द चित्र और रेखा चित्र हैं। उन्होंने आँखों को आध्यात्मिक आनन्द को ग्रहण करने का मुख्य स्रोत माना है। जो 'इश्क–चमन' चित्र को देखने से स्पष्ट है, क्योंकि बोधि अथवा प्रज्ञान बुद्धि में बन्द नहीं रहता, वरन् वह सारे मुख पर प्रभा सा छा जाता है और आँखो की दृष्टि से झरता है।[10] आखों से झरना ही तो सर्वत्र सौन्दर्य का प्रसारण करना है। यह सौन्दर्य सामान्य सौन्दर्य नहीं, यह तो पीढ़ियों से मिला भक्ति का चरणामृत हैं दूसरा चित्र नागरीदास का **"रैन रूपारस"** एक पृष्ठ का है। इसमें बड़ी–बड़ी रात की जागी **अलसाइ, आँखे** हैं और एक–एक आँख में एक–एक दोहा है। सब आँखों का करिश्मा है।[11]

किशनगढ़ के चित्रों में आंखों का वर्णन तो हुआ ही है। साथ ही काव्य में भी अनेक शब्द चित्र विद्यमान है। नागरीदास की वल्लभीय भक्ति से ओतप्रोत वहाँ के कलाकारों ने आध्यात्मिक भावभूमि को चित्रों का आधार बनाया और राधा–माधव को सामान्य जन के समान चित्रित किया है। इस शैली का कोई भी चित्र उठाकर देखने से सर्वप्रथम आंखों पर ही दृष्टि जाती है। वह चित्र चाहे बणी ठणी का हो या राधा का, नागरीदास की उपासना हो या राधा–कृष्ण होली, ताम्बूल सेवा हो या साँझी लीला का सभी में नेत्रों को आध्यात्मिक रूप से चित्रित किया गया है। तथा सारे मुखमण्डल में नेत्र इतने प्रमुख रहते है कि दर्शक की प्रथम दृष्टि वहीं पर मंडराने लगती है और दर्शक कृति के रूप सागर में हिलोरे लेने

लगता है।

साँझी लीला

ताम्बूल सेवा

वास्तव में किशनगढ़ के चित्रों में नेत्रों का चित्रांकन अति सौन्दर्यात्मक ढंग से किया गया है, क्योंकि उसके मूल में आध्यात्मिक चिंतन समाया है। "कृष्ण–चित्रों" में इस कटावदार आँख का पहले पहल आलेखन हुआ होगा, क्योंकि उस काल के रसिकराय कृष्ण की छवि के अनुरूप है और वहाँ के चित्रकार उसी परम्परा के हैं जो आरम्भ से ही वल्लभसम्प्रदाय सम्बन्धित थे।[12]

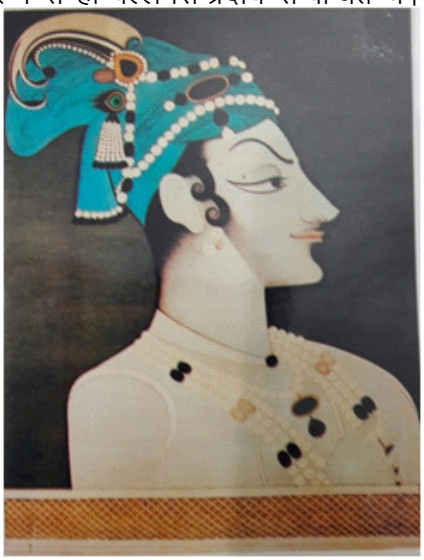

आँखे ही सम्पूर्ण दृश्य कलाओं को पढ़ती है और रस की **अनुभूति** करती हैं। आँखों के बिना सभी दृश्य कलाएँ अर्थहीन व स्वादहीन होती है। किशनगढ़ के चित्रों में आँखों का स्थान एक भव्य मन्दिर

के विशाल प्रवेश द्वार के समान है जिसमें वही साधक प्रवेश कर सकता है जिसके मानस में आध्यात्मिक प्रेम भक्ति की रसधारा प्रस्फुटित होगी।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. गोस्वामी प्रेमचन्द, *"भारतीय कला के विविध स्वरूप"*, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण–1997, पृष्ठ–**91**
2. नीरज, डॉ0 जयसिंह एवं शर्मा, डॉ0 बी0एल0, *''राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा"*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण–1989
3. अग्रवाल, डॉ0 श्याम बिहारी, *भारतीय चित्रकला और काव्य* (मध्यकालीन भारतीय चित्रकला)– पृष्ठ–**18**
4. वही – पृष्ठ **18**
5. तिवारी", डॉ0 रघुनन्दन प्रसाद, *भारतीय चित्रकला और उसके मूल तत्व*– पृष्ठ**–62**
6. शर्मा", भट्ट रामनाथ, भक्तिवर्द्धिनी, शोडष ग्रंथ – श्लोक सं0–1
7. गोस्वामी, प्रेमचन्द, *राजस्थान की लघु चित्र शैलियाँ,* पृष्ठ–**30**
8. तिवारी, डॉ0 रघुनन्दन प्रसाद, *भारतीय चित्रकला और उसके मूल तत्व* –पृष्ठ सं0–**62**
9. शर्मा, डॉ0 हरद्वारी लाल, *हमारी सौन्दर्य सम्पदा*– पृष्ठ **89**
10. गुप्ता, किशोरीलाल नागरीदास, ग्रन्थावली– पृष्ठ–**5**
11. वही"
12. दास, रायकृष्ण, गुण्ठेसीताराम, *भारत की चित्रकला* – लीडर प्रेस, इलाहाबाद, पृष्ठ–**85**